Indian Journal of Economics, Commerce and Management (IJECM)
ISSN:
Website: https://www.economicsandcommerce.in/
Volume 1; Issue 1; January to March 2025; Page No. 26-35

मध्य प्रदेश में बैगा जनजाति का पारिवारिक एवं आर्थिक अध्ययन

डा0 सुनीता बघेल
सहायक प्राध्यापक
शासकीय महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश
Email: sunita.mpissr@gmail.com

सारांश

यह समुदाय प्रारम्भ से ही जंगलों, पहाड़ों एवं दूर–दराज के इलाकों में आधुनिक सभ्यता के लाभों से वंचित, प्रगति की दौड़ में पिछड़ा, अशिक्षा तथा शोषण का शिकार, कृषि, उद्योग–धंधों आदि से अनभिज्ञ रहा है। पहाड़ी धरातल, अनुपजाऊ भूमि, अविकसित यातायात एवं सघन वन जनजातीय क्षेत्रों की प्रमुख विशेषता रही है। अध्ययन हेतु कुल 10 ग्रामों में से प्रत्यके ग्राम से 18 जनजातीय ग्राम सभा सदस्य एवं 6 गैर–जनजातीय ग्राम सभा सदस्यों को यादृच्छिक आधार पर चयनित किया गया। इस प्रकार 10 ग्रामों से 180 जनजातीय ग्राम सभा सदस्य एवं 60 गैर–जनजातीय ग्रामसभा सदस्यों का चयन अध्ययन हेतु किया गया। अतः निदर्षन का कुल आकार 240 है।

मुख्य शब्दः मध्य प्रदेश, बैगा, जनजाति, परिवार

भारत विविधताओं वाला देश है, जहाँ विभिन्न समुदाय के लोग निवास करते हैं जिनकी पृथक संस्कृति, पृथक धर्म, पृथक विश्वास एवं आस्थाएँ हैं। इन्हीं समुदायों में से एक है जनजातीय समुदाय, जिसकी सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर में विशिष्ट भूमिका रही है। इस आदिवासी समुदाय को विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग नामों की संज्ञा दी है। मार्टिन एवं रिजले ने इन्हें 'आदिवासी' हट्टन ने इन्हें 'आदिम जातियाँ' सर वेन्स ने इन्हें 'पर्वतीय आदिम जातियाँ' या वन्य जातियाँ घुरिये ने इन्हें 'पिछड़े हुए हिन्दु' तथा वनों में रहने के कारण गाँधीजी ने इन्हें 'गिरिजन' के नाम से पुकारा है। भारतीय संविधान में इन्हें 'अनुसूचित जनजाति' के नाम से सूचीबद्ध किया गया है (पालोत, आर. सी. 1987: 1)।

यह समुदाय प्रारम्भ से ही जंगलों, पहाड़ों एवं दूर–दराज के इलाकों में आधुनिक सभ्यता के लाभों से वंचित, प्रगति की दौड़ में पिछड़ा, अशिक्षा तथा शोषण का शिकार, कृषि, उद्योग–धंधों आदि से अनभिज्ञ रहा है। पहाड़ी धरातल, अनुपजाऊ भूमि, अविकसित यातायात एवं सघन वन जनजातीय क्षेत्रों

की प्रमुख विशेषता रही है। यह समुदाय अपने सीमित संसाधनों से केवल जीवित रहना ही सीख सका है और आज भी 21वीं शताब्दी की विज्ञानवादी सभ्यता की पहुँच इनसे काफी दूर है (गुप्ता, 2003: 1–4)। उद्विकासवादी सिद्धान्त के प्रवर्तकों ने जनजातियों को 'अकेले छोड़ देने' की नीति का समर्थन किया। आगे चलकर अलग–अलग रखने की नीति को डॉ. एम. सी. राय, डॉ. डी. एन. मजूमदार एवं वेरियर एल्विन ने और भी बल प्रदान किया (त्रिपाठी,1973: 8–13)।

जनजातीय समाज सच्चे अर्थो में समुदायों का एक समुदाय है। जिनकी अपनी जीवन षैली है। इनके विषिष्ट रीति–रिवाज एवं संस्कृति की अपनी पहचान है ये लोग सदियों से अलगाव की स्थितियों में राष्ट्र की मुख्यधारा से पृथक रहे हैं। इन अलगाव की स्थितियों ने उन्हें असमानता, षोषण एवं निम्न स्थिति का जीवन जीने पर विवष किया है।

अध्ययन हेतु कुल 10 ग्रामों में से प्रत्यके ग्राम से 18 जनजातीय ग्राम सभा सदस्य एवं 6 गैर–जनजातीय ग्राम सभा सदस्यों को यादृच्छिक आधार पर चयनित किया गया। इस प्रकार 10 ग्रामों से 180 जनजातीय ग्राम सभा सदस्य एवं 60 गैर–जनजातीय ग्रामसभा सदस्यों का चयन अध्ययन हेतु किया गया। अतः निदर्षन का कुल आकार 240 है।

जनजातीय वर्ग जो परम्परागत रूप से उच्च जाति और वर्ग के व्यक्तियों द्वारा शोषित किये गये हैं तथा जिनके अधिकार, शक्ति, सत्ता और सुविधा की परिधि अत्यन्त सीमित रही है, ऐसे समूहों के राजनीतिक मूल्यों के अन्तरीकरण और राजनीतिक सहभागिता के निर्धारण में उनके सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

परिवार का मुख्य व्यवसाय

वर्तमान अध्ययन् के उत्तरदाता जनजातीय समुदाय के सदस्य हैं। इस जाति का परम्परागत व्यवसाय कृषि करना, जंगल से हर्रा, बेहड़ा, चारा आदि को लाकर बेचना रहा है। जिसकी आधारशिला पर परम्परागत आर्थिक संरचना और सामाजिक – आर्थिक सम्बन्धों का भवन टिका हुआ हैं। इस बारे में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी जिसे सारणी क्रमांक 1 में प्रदर्षित किया गया है।

सारणी क्रमांक 1

परिवार का मुख्य व्यवसाय

क्र. सं.	परिवार का मुख्य व्यवसाय	जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)	गैर जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)
1	कृषि	46 (25.6)	18 (30.0)
2	कृषि मजदूरी	52 (28.6)	15 (25.0)
3	गैर कृषि मजदूरी	37 (20.6)	4 (6.7)
4	नौकरी	9 (5.0)	12 (20.0)
5	व्यापार / दुकान	36 (20.0)	11 (16.3)

सारणी से स्पष्ट है कि 25.6 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता कृषि करते हैं, 28.6 प्रतिषत कृषि मजदूरी करते हैं, 20.6 गैर कृषि मजदूरी करते है, 5.0 प्रतिशत नौकरी करते है, 20.0 प्रतिषत व्यापार करते हैं जबकि 30.0 प्रतिषत गैर–जनजातीय उत्तरदाता कृषि करते हैं, 25.0 प्रतिषत कृषि मजदूरी करते है, 6.7 प्रतिषत गैर कृषि मजदूरी करते है, 20.0 प्रतिषत नौकरी करते है, 16.3 प्रतिषत व्यापार करते है।

स्पष्ट है जनजातीय एवं गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं में कृषि एवं कृषि मजदूरी मुख्य व्यवसाय है। जनजातीय उत्तरदाताओं में गैर–कृषि मजदूरी करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिषत भी उल्लेखनीय हैं वहीं गैर–जनजातीय में नौकरी करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिषत उल्लेखनीय है।

परिवार का स्वरूप

परिवार भारतीय सामाजिक संरचना की प्रमुख इकाई है। भारतीय परिवार व्यवस्था में भी संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार दो प्रकार की व्यवस्था है। संयुक्त परिवार व्यवस्था परम्परागत ग्रामीण आर्थिक संरचना के अनुरूप रही है। संयुक्त परिवार ने कृषि उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर श्रम प्रदान करके परम्परागत आर्थिक संरचना को स्थायित्व प्रदान करने में योगदान दिया है। आधुनिक युग में परिवर्तन की नवीन शक्तियाँ विशेषकर औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार, आर्थिक और व्यावसायिक जीवन में होने वाले परिवर्तनों आदि के परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार की संरचना में परिवर्तन हो रहा है एवं एकाकी परिवारों का विकास हो रहा है। इसके आधार पर परिवार व्यवस्था ने व्यक्ति की सोच एवं उसके विचारों को किस दिशा में अग्रसर किया है। इस सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से जानकारी ली गयी जिसे सारणी क्रमांक 2में वर्गीकृत किया गया है।

सारणी क्रमांक 2

परिवार का स्वरूप

क्र. सं.	परिवार का स्वरुप	जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)	गैर जनजातीय सदस्य आवृत्ति(प्रतिषत)
1	एकाकी	41 (22.8)	26 (43.3)
2	संयुक्त	139 (77.2)	34 (55.0)

सारणी से स्पष्ट है कि 77.2 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाताओं के परिवार का स्वरूप संयुक्त है, 22.8 प्रतिषत परिवारों का स्वरूप एकाकी हैं, तथा 55.0 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं के परिवार का स्वरूप संयुक्त है, 43.3 प्रतिषत परिवारों का स्वरूप एकाकी हैं अतः स्पष्ट है गैर–जनजातीय के मुकाबले जनजातीय परिवारों में संयुक्त परिवार का प्रतिषत अधिक हैं।

मकान का स्वामित्व

निवास स्थान की प्रकृति व्यक्ति के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का एक महत्त्वपूर्ण परिचायक है। व्यक्ति अपने जीवन–उपलब्धि, धन–ऐश्वर्य की अभिव्यक्ति अपने निवास–स्थान के माध्यम से करता है। निवास स्थान न केवल व्यक्ति का प्राकृतिक और पारिस्थितिकीय विशेषताओं के साथ एक समझौता है बल्कि यह मानवीय सभ्यता की प्रगति का परिचायक भी है। इस सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी जिसे सारणी क्रमांक 3 में वर्गीकृत किया गया हैं।

सारणी क्रमांक 3

मकान का स्वामित्व

क्र. सं.	मकान का स्वामित्व	जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)	गैर जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)
1	स्वयं का	153 (85.0)	43 (71.7)
2	किराये का	13 (7.2)	8 (13.3)
3	शासन द्वारा प्रदत्त	14 (7.8)	9 (15.0)

सारणी से स्पष्ट है कि 85.0 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाताओं के पास स्वयं का मकान है, 7.2 प्रतिषत किराये के मकान में रहते है, 7.8 प्रतिषत ष्षासन द्वारा प्रदत्त मकान में रहते हैं जबकि 71.7 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं के पास स्वयं का मकान है, 13.3 प्रतिषत किराये के मकान में रहते है, 15.0 प्रतिषत षासन द्वारा प्रदत्त मकान में रहते है। अतः स्पष्ट है कि जनजातीय एवं गैर–जनजातीय बहुसंख्यक उत्तरदाताओं के पास स्वयं का मकान है।

परिवार की कुल मासिक आय

आय व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा उसके सम्मान का प्रतीक है तथा कार्य के लिए प्रेरणा है। इससे जीवन षैली के निर्धारण के साथ ही सामाजिक मूल्यों को दिषा मिलती है। व्यक्ति की आय का सामाजिक, आर्थिक स्थिति के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान होता है, जिसे सारणी क्रमांक 4 में प्रदर्षित किया गया है।

सारणी क्रमांक 4

परिवार की कुल मासिक आय

क्र. सं.	परिवार की कुल आय	जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)	गैर जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)
1	रू 1500 तक	59 (32.0)	2 (3.3)
2	1501–2500	78 (43.3)	9 (15.0)
3	2501–5000	29 (16.1)	25 (41.7)
4	5001– ऊपर	14 (7.8)	24 (40.0)

सारणी क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि 32.0 प्रतिषत जनजातीय उत्तरदाताओं की मासिक आय 1500 तक है, 43.3 प्रतिषत उत्तरदाताओं की 1501–2500 के मध्य, 16.1 प्रतिषत उत्तरदाताओं की 2501–5000 के मध्य एवं 7.8 प्रतिषत उत्तरदाताओं की मासिक आय 5001 से अधिक है जबकि 3.3 प्रतिषत गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं की मासिक आय 1500 तक है, 15.0 प्रतिषत उत्तरदाताओं की 1501–2500 के मध्य, 41.7 प्रतिषत उत्तरदाताओं की 2501–5000 के मध्य एवं 40.0 प्रतिषत उत्तरदाताओं की मासिक आय 5001 से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि सर्वाधिक जनजातीय उत्तरदाताओं की मासिक आय 1501–2500 के मध्य है एवं गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं की मासिक आय 2501–5000 के मध्य है।

मकान का स्वरूप

मकान के स्वरूप सम्बंधित उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी जिसे सारणी क्रमांक 5 में वर्गीकृत किया गया है।

सारणी क्रमांक 5

मकान का स्वरूप

क्र. सं.	मकान का स्वरूप	जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)	गैर जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)
1	कच्चा	129 (71.7)	36 (60.0)
2	पक्का	22 (12.2)	13 (21.7)
3	अर्ध्दपक्का	29 (16.1)	11 (18.3)

सारणी से स्पष्ट है कि 71.7 प्रतिषत जनजातीय उत्तरदाताओं के पास कच्चा मकान है, 12.2 प्रतिषत उत्तरदाताओं के पास पक्का मकान है एवं 16.1 प्रतिषत उत्तरदाताओं के पास अर्ध्दपक्का मकान है जबकि 60.0 प्रतिषत गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं के पास कच्चा मकान है, 21.7 प्रतिषत उत्तरदाताओं के पास पक्का मकान है एवं 18.3 प्रतिषत उत्तरदाताओं के पास अर्ध्दपक्का मकान है। स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं, जनजातीय एवं गैर–जनजातीय, के पास कच्चा मकान है।

पेयजल का मुख्य स्रोत

पेयजल का मुख्य स्रोत के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी जिसे सारणी क्रमांक 6 में प्रदर्षित किया गया है।

सारणी क्रमांक 6

पेयजल का मुख्य स्रोत

क्र. सं.	पेयजल का मुख्य स्रोत	जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)	गैर जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)
1	घर में नल कनेक्षन	2 (1.1)	5 (8.3)
2	घर के बाहर नल	1 (0.6)	3 (5.0)
3	ट्यूबवेल	19 (10.6)	7 (11.7)
4	कुआं	29 (16.1)	10 (16.7)
5	हैण्डपम्प	104 (57.8)	33 (55.0)
6	प्राकतिक स्रोत	25 (13.9)	2 (3.3)

सारणी क्रमांक 6 से स्पष्ट है कि 1.1 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता के घर में नल कनेक्षन, .6 प्रतिशत उत्तरदाता के घर के बाहर नल, 10.6 प्रतिशत उत्तरदाता ट्यूबवेल, 16.1 प्रतिशत उत्तरदाता कुआं, 57.8 प्रतिशत उत्तरदाता हैण्डपम्प एवं 13.9 प्रतिशत उत्तरदाता प्राकृफ्रफ्रतिक स्रोत का उपयोग करते हैं तथा 8.3 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता के घर में नल कनेक्षन, 5.0 प्रतिशत उत्तरदाता के घर के बाहर नल, 11.7 प्रतिशत उत्तरदाता ट्यूबवेल, 16.7 प्रतिशत उत्तरदाता कुआं एवं 55.0 प्रतिशत उत्तरदाता हैण्डपम्प का उपयोग करते हैं। स्पष्ट है कि बहुसंख्यक उत्तरदाता, जनजातीय एवं गैर–जनजातीय, पेयजल के मुख्य स्रोत के रूप में हैण्डपम्प का उपयोग करते हैं।

विद्युत व्यवस्था के मुख्य स्रोत

विद्युत व्यवस्था के मुख्य स्रोत के बारे उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी जिसे सारणी क्रमांक 7 में वर्गीकृत किया गया है।

सारणी क्रमांक 7

विद्युत व्यवस्था के मुख्य स्रोत

क्र. सं.	विद्युत व्यवस्था का मुख्य स्त्रोत	जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)	गैर जनजातीय सदस्य आवृत्ति(प्रतिषत)
1	विद्युत कनेक्षन	139 (77.7)	48 (80.0)
2	घासलेट लैम्प	32 (17.8)	10 (16.7)
3	विद्युत व्यवस्था नही	3 (1.7)	0 (00)
4	अन्य	6 (3.3)	2 (3.3)

सारणी क्रमांक 7 से स्पष्ट होता है कि 77.7 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाताओं के घर में विद्युत कनेक्शन है, 17.8 प्रतिशत उत्तरदाता घासलेट लैम्प का उपयोग करते हैं जबकि 80.0 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं के घर में विद्युत कनेक्शन है,16.7 प्रतिशत उत्तरदाता घासलेट लैम्प का

उपयोग करते हैं। अतः स्पष्ट है कि बहुसंख्यक जनजातीय एवं गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं, के घर में विद्युत कनेक्शन है।

भोजन पकाने हेतु प्रयुक्त ईंधन

उत्तरदाताओं से भोजन पकाने हेतु प्रयुक्त ईंधन के बारे में जानकारी ली गयी जिसे सारणी क्रमांक 8 में प्रदर्षित किया गया है।

सारणी क्रमांक 8

भोजन पकाने हेतु प्रयुक्त ईंधन

क्र. सं.	भोजन पकाने हेतु प्रयुक्त ईंधन	जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)	गैर जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)
1	गोबर गैस	3 (1.7)	7 (11.7)
2	केरोसीन	10 (5.6)	6 (10.0)
3	लकड़ी/कण्डे	167 (92.7)	47 (78.3)

तथ्यों का संकलन से स्पष्ट होता है कि 92.7 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता भोजन पकाने हेतु लकडी/कण्डे का उपयोग करते हैं। 5.6 प्रतिशत उत्तरदाता केरोसीन एवं 1.7 प्रतिशत उत्तरदाता भोजन पकाने हेतु गोबर गैस का उपयोग करते हैं जबकि 78.3 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता भोजन पकाने हेतु लकडी/कण्डे का उपयोग करते हैं। 10.0 प्रतिशत उत्तरदाता केरोसीन एवं 11.7 प्रतिशत उत्तरदाता भोजन पकाने हेतु गोबर गैस का उपयोग करते हैं। स्पष्ट है कि जनजातीय समाज एवं गैर जनजातीय समाज दोनो में ही भोजन पकाने हेतु ईंधन के रूप में सर्वाधिक लकड़ी और कण्डे का उपयोग किया जाता है।

परिवार के पास दैनिक उपयोग की चीजे

जनजातीय समाज में दैनिक उपयोग कि विभिन्न वस्तुएँ जैसे साइकिल, रेडियो, टेलीविजन, लैपटॉप, पंखा/कूलर, मोबाइल फोन, स्कूटर/मोटरसाईकिल इत्यादि न केवल व्यक्ति की मनोरंजन की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं बल्कि ये व्यक्तिगत और पारिवारिक प्रतिष्ठा के प्रतीक भी है। वर्तमान अध्ययन के उत्तरदाताओं के परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करते हुए उपयोग की विभिन्न वस्तुओं के स्वामित्व के सम्बन्ध में आँकड़े एकत्रित किये गये हैं। जिसे सारणी क्रमांक 9 में वर्गीकृत किया गया है।

सारणी क्रमांक 9

परिवार के पास दैनिक उपयोग की चीजे

क्र. सं.	परिवार के पास दैनिक उपयोग की चीजें	जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)	गैर जनजातीय सदस्य आवृत्ति (प्रतिषत)
1	कार / जीप / वैन	12 (6.7)	5 (8.3)
2	स्कूटर / मोटरसाईकिल	101 (56.1)	29 (48.3)
3	एयरकंडीनर	00 (00)	3 (5.3)
4	कम्पयूटर / लैपटॉप	25 (13.9)	15 (25.0)
5	वषिंग मषीन / माईक्रोवेव / फ्रिज	11 (6.1)	2 (3.3)
6	पंखा / कूलर	117 (65.0)	44 (73.3)
7	टेलीविजन	16 (8.9)	9 (15.0)
8	मोबाइल फोन	130 (72.2)	51 (85.0)
9	एल.पी.जी. गैस	25 (13.9)	13 (21.7)
10	मोटर पंम्पिंग सेट सिंचाई के लिए	81 (45.0)	23 (38.3)
11	ट्रैक्टर	3 (1.7)	7 (11.7)
12	पॉवर बैकअप इंवर्टर जेनरेटर	3 (1.7)	7 (11.7)

प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि 6.7 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाताओं के पास कार / जीप / वैन है, 56.1 प्रतिषत के पास स्कूटर / मोटरसाईकिल है, 13.9 प्रतिषत के पास कम्पयूटर / लैपटॉप है, 6.1 प्रतिषत के पास वषिंग मषीन / माईक्रोवेव / फ्रिज है, 65.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास पंखा / कूलर हैं। 8.9 प्रतिषत के पास टेलीविजन है, 72.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास मोबाइल फोन है, 13.9 प्रतिषत के पास एल.पी.जी. गैस है, 45.0 प्रतिषत के पास मोटर पंम्पिंग सेट सिंचाई के लिए है,1.7 प्रतिषत के पास समान रूप से ट्रैक्टर एवं पॉवर बैकअप इंवेर्टर जेनरेटर हैं, जबकि 8.3 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं के पास कार / जीप / वैन है, 48.3 प्रतिषत के पास स्कूटर / मोटरसाईकिल है, 25.0 प्रतिषत के पास कम्पयूटर / लैपटॉप है, 3.3 प्रतिषत के पास वषिंग मषीन / माईक्रोवेव / फ्रिज है, 73.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास पंखा / कूलर हैं। 15.0 प्रतिषत के पास टेलीविजन है, 85.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास मोबाइल फोन है, 21.7 प्रतिषत के पास एल.पी.जी. गैस है, 38.3 प्रतिषत के पास मोटर पंम्पिंग सेट सिंचाई के लिए है,11.7 प्रतिषत के पास समान रूप से ट्रैक्टर एवं पॉवर बैकअप इंवेर्टर जेनरेटर हैं। अतः तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि जनजातीय परिवार में दैनिक उपयोग और मनोरंजन की वस्तुएं गैर–जनजातीय समाज की अपेक्षा कम हैं।

निष्कर्ष:

जनजातीय समाज के उत्तरदाताओं से उनकी सामाजिक, आर्थिक, पृष्ठाभूमि से जुड़े तथ्यों को स्पष्ट किया गया हैं। परम्परागत जनजातीय परिवार का शैक्षणिक स्तर निम्न रहा है। आधुनिक परिवार

में शिक्षा प्रसार की व्यापक प्रक्रिया और जनजातीय समुदाय के कल्याण कार्यक्रम के द्वारा इस क्षेत्र में कुछ परिवर्तन आया है तथा युवा पीढ़ी शिक्षा ग्रहण की ओर अग्रसर हो रही है।

जनजातीय एवं गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं में कृषि एवं कृषि मजदूरी मुख्य व्यवसाय है। जनजातीय उत्तरदाताओं में गैर कृषि मजदूरी करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिषत भी उल्लेखनीय हैं वहीं गैर–जनजातीय में नौकरी करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिषत उल्लेखनीय है। गैर–जनजातीय के मुकाबले जनजातीय परिवारों में संयुक्त परिवार का प्रतिषत अधिक हैं। जनजातीय एवं गैर–जनजातीय बहुसंख्यक उत्तरदाताओं के पास स्वयं का मकान है।

सर्वाधिक जनजातीय उत्तरदाताओं की मासिक आय 1501–2500 के मध्य है। एवं गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं की मासिक आय 2501–5000–के मध्य है। सर्वाधिक जनजातीय एवं गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं, के पास कच्चा मकान है। बहुसंख्यक जनजातीय एवं गैर–जनजातीय उत्तरदाता पेयजल के मुख्य स्रोत के रूप में हैण्डपम्प का उपयोग करते हैं। बहुसंख्यक जनजातीय एवं गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं, के घर में विद्युत कनेक्शन है। जनजातीय समाज एवं गैर जनजातीय समाज दोनो में ही भोजन पकाने हेतु ईंधन के रूप में सर्वाधिक लकड़ी और कण्डे का उपयोग किया जाता है।

परिवार में उपयोग की दैनिक चीजे जैसे–कार, जीप, स्कूटर/मोटरसाईकिल, कम्प्यूटर, पंखा/कूलर, टेलीविजन, मोबाइल फोन, मोटर पंम्पिंग सेट, इत्यादि अलग–अलग मात्रा में पायी गयी है। जनजातीय परिवार में दैनिक उपयोग और मनोरंजन की वस्तुएं गैर–जनजातीय समाज की अपेक्षा कम हैं। जनजातीय परिवार में उपयोग और मनोरंजन की वस्तुओं में वृद्धि हो रही तथा दैनिक चीजों के प्रति इनका आकर्षण बढता जा रहा हैं यह स्थिति उनके परिवर्तनशील सामाजिक–आर्थिक स्थिति का परिचायक है।

संदर्भिका

अटल योगेश, सिसोदिया यतीन्द्रसिंह (2011), *आदिवासी भारत,* रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।

बापूजी, एम. (1993), *ट्राइबल डेवलपमेंट एडमिनिस्ट्रेशन,* कनिष्क पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

भाटिया, अन्जू (2000), *विमेन्स डेवलपमेंट एण्ड एन जी ओस्,* रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।

दिनेश पाटीदार एवं ज्ञान प्रकाश, *प्रवासी श्रमिकों का आर्थिक अध्ययन,* बुलेटिन, जनवरी 2003–2004, आदिम जाति शोध संस्थान भोपाल।

गुप्ता, मंजू (2003), *जनजातियों का सामाजिक आर्थिक उत्थान,* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

कुलकर्णी, वी एम (1967), वॉलेन्टरी एक्शन इन ए डेवलपिंग सोसायटी, *इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन* नई दिल्ली।

मेहता, पी सी (1993), *भारत के आदिवासी,* शिवा पब्लिशर्स, उदयपुर।

सिसोदिया यतीन्द्रसिंह, (1999), *पॉलिटिकल कंशसनेस अमंग ट्राइबल्स,* रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।

तिवारी, कुमार राकेश (1990), *आदिवासी समाज में आर्थिक परिवर्तन,* नार्दन बुक सेंटर अंसारी रोड़, नई दिल्ली।